SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

दीनदयाल उपाध्याय; एक युगपुरुष एवं वसुधैव कुटुंब के मार्गदर्शक

लक्ष्मी प्रसाद पटेल, शोधार्थी, सामाजिक कार्य विभाग
नवीन शासकीय महाविद्यालय, कंसाबेल, जशपुर, छतीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author

लक्ष्मी प्रसाद पटेल, शोधार्थी,
E-mail : laxmiprasadpatel8@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 03/10/2024
Revised on : 04/12/2024
Accepted on : 13/12/2024
Overall Similarity : 00% on 05/12/2024

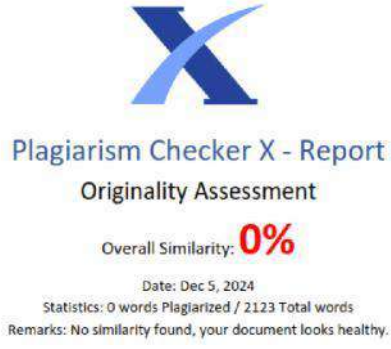

शोध सार

संस्कृति किसी भी राष्ट्र की बहुमूल्य धरोहर होती है तो यह किसी भी राष्ट्र के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण तत्व और अभिन्न अंग होता है। जब दीनदयाल उपाध्याय और भारतीय संस्कृति की बात आती है, तो यह उस मूल सनातन संस्कृति के बारे में है, जिसकी नींव भारतीय राष्ट्र की पहचान पर आधारित है। दीनदयाल उपाध्याय उस संस्कृति के बारे में बात करते हैं जिसमें जीवन और उसके विकास का एक पूरा पहलू है जिसमें समता होती है। दीनदयाल उपाध्याय ने अपने विचारों और कार्यों में जीवन के किसी एक पहलू को विशेष महत्व नहीं दिया है। दीनदयाल उपाध्याय की सोच का आधार समग्र है जिसमें व्यक्ति, सामूहिक और सृजन की समग्र सोच होती है। संस्कृति के बारे में उनकी सोच का आधार भी समग्र है। प्रस्तुत शोध पत्र का आधार सनातन संस्कृति है, जिसकी वकालत दीनदयाल उपाध्याय ने की है। दीनदयाल उपाध्याय सनातन संस्कृति के संरक्षक बने। यह शोध पत्र सनातन भारतीय संस्कृति की अनूठी विशेषता और दीनदयाल उपाध्याय के अनुभव और विचारों पर आधारित है। अध्ययन की कार्यप्रणाली: किसी भी शोध कार्य की गुणवत्ता के लिए, अनुसंधान विधि का विशेष महत्व है इसलिए, प्रस्तुत लेख में व्याख्यात्मक विधि का उपयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य: इस शोध लेख का उद्देश्य भारत की संस्कृति की मौलिकता और महानता को उजागर करना है, जिसके लिए दीनदयाल उपाध्याय ने अपने पूरे जीवन में काम किया भारत की सांस्कृतिक विरासत से संबंधित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को उजागर करना हैं।

मुख्य शब्द

भारतीय संस्कृति, आर्थिक समानता, मौलिकता, संरक्षण, सांस्कृतिक विरासत.

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की संस्कृति उस राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में समुदायों के जीवन, नैतिकता, रीति–रिवाजों, सामाजिक व्यवहार और सामाजिक मूल्यों से विकसित होती है। राष्ट्र की सामाजिक प्रवृत्तियों के अनुसार संस्कृति का विकास होता है। एक ऐसी संस्कृति जिसका सामाजिक प्रवृत्तियों में सामाजिक और मानवीय मूल्यों का स्थान है, उसकी विशेषता अन्य संस्कृतियों से अलग है। हम भारतीय संस्कृति में इस विशेषता को देख सकते हैं। भारत की संस्कृति का आधार जिम्मेदारी, मानवता, नैतिक मूल्य और बंधुत्व है। इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए यहां के लोगों ने अपने स्वभाव से परे, कई उदाहरण स्थापित किए हैं। ऐसा कहा जाता है कि भारत की संस्कृति विश्व संस्कृति की उत्पत्ति है, यह हिमालय की तलहटी के माध्यम से पूरी दुनिया में फैली हुई है। अपनी संस्कृति के प्रति समर्पण भारतीय संस्कृति की सुंदरता भी है।

दीनदयाल उपाध्याय भी स्वभाव से राजनेता नहीं थे लेकिन वे भारतीय संस्कृति में विश्वास करते थे। ''वह बिगड़ती भारतीय व्यवस्था में सुधार के लिए राजनीति में आए थे। उदाहरण के लिए, आचार्य चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के राज्य के निर्माण के लिए राजनीति में प्रवेश किया। शिवाजी महाराज, जो आध्यात्मिक प्रवृति के थे, हिंदुओं की समस्याओं को सुनकर राजनीति में आए। गणितज्ञ तिलक स्वराज के लिए राजनीति में भाग लेने गए थे (freedom of India)। इसी तरह, हिंदुओं के सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित संघ कार्य (आरएसएस) द्वारा शुरू किए गए। दीनदयाल उपाध्याय राजनीति में आए क्योंकि वे कांग्रेस की राजनीति से देश को उखाड़ते हुए नहीं देख सकते थे।

दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राष्ट्र की संस्कृति की उस परंपरा का पालन करने के लिए राजनीति में आए, ताकि राष्ट्र और संस्कृति के अस्तित्व की रक्षा की जा सके, क्योंकि दीनदयाल इस राष्ट्र की सनातन संस्कृति के सच्चे रक्षक थे। 1947 में देश को राजनीतिक स्वतंत्रता मिली, लेकिन केवल यही हमारे राष्ट्रीय लक्ष्य को पूरा करता है? यह सवाल देश के सामने था क्योंकि जब अंग्रेजों ने भारत को राजनीतिक स्वतंत्रता दी, तो उन्होंने अपनी शिक्षा, संस्कृति, भाषा और व्यवस्था की छाप यहां छोड़ी। यह स्वतंत्र भारत की भविष्य की विकास यात्रा और राष्ट्र के अस्तित्व के लिए एक बड़ी चुनौती थी।

अंग्रेजों और ब्रिटिश शासन के जाने के बाद, इस तथ्य पर ध्यान देना भी बहुत महत्वपूर्ण था कि देश को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में स्वतंत्रता का अनुभव होना चाहिए।

दीन दयाल उपाध्याय इसी उद्देश्य से राजनीति में आए थे। दीनदयाल उपाध्याय राजनीति में संस्कृति के अग्रदूत बने। दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार, ''राष्ट्र की सांस्कृतिक स्वतंत्रता अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि संस्कृति राष्ट्र के पूरे शरीर में जीवन की तरह संवाद करती है। प्रकृति के तत्वों पर विजय प्राप्त करने के प्रयास में और मानव धारणा की कल्पना में मनुष्य जो जीवन शैली बनाता है, वह उसकी संस्कृति है। संस्कृति कभी भी गतिहीन नहीं होती, बल्कि निरंतर चलती रहती है, फिर भी इसका अपना अस्तित्व है। हालाँकि यह नदी के प्रवाह की तरह निरंतर चलती रहती है, लेकिन यह अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं को बनाए रखती है, जो समाज की संस्कृति में उस सांस्कृतिक दृष्टिकोण को उत्पन्न करती है और उस सांस्कृतिक भावना के साथ साहित्य, कला, दर्शन, स्मृति, ग्रंथ, अन्य राष्ट्रों की सामाजिक–रचना भी करती है। यह इतिहास और सभ्यता के विभिन्न हिस्सों में व्यक्त किया जाता है। निर्भरता की अवधि के दौरान ये सभी प्रभावित हो जाते हैं और प्राकृतिक प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है। आज स्वतंत्र होने के नाते, यह आवश्यक है कि हमारे प्रवाह की सभी बाधाओं को दूर किया जाए और हम राष्ट्र के सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा के अनुसार विकास कर सकें।

दीनदयाल उपाध्याय की एक गहरी बात थी संस्कृति में विश्वास। उनकी संस्कृति की अवधारणा भारतीय संस्कृति की शुद्ध जड़ पर आधारित है। यह देश के विभिन्न समाजों के जीवन से बनाया गया है। दीनदयाल उपाध्याय सांस्कृतिक जन्मवाद के संरक्षक बन गए। उन्होंने कहा कि ''हमारी संस्कृति नदी के प्रवाह की तरह गतिशील है। यह उनकी विशेषताओं को संजोए रखता है। राष्ट्र संस्कृति को राष्ट्र में देशभक्ति की भावना पैदा करने और उसे साकार करने का श्रेय दिया जाता है।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें समाज को जोड़ने और देश के प्रति भक्ति की भावना पैदा करने की क्षमता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भारतीय संस्कृति दुनिया की अन्य संस्कृतियों से अलग है। भारतीय संस्कृति समन्वय पर आधारित एक ऐसी संस्कृति है जिसमें सभी पहलुओं पर एक साथ विचार किया गया है। भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, इसका वसुधैवकुटुम्बकम् भाव जो धर्म कर्म मर्यादा व त्याग पर टिका हुआ है इसका अर्थ है, कि जैसे नींव सम्पूर्ण इमारत का भार वहन करती है वैसे ही संस्कृति समाज को दिशा निर्देश देती है, इसकी मौलिकता ही इसकी शक्ति भी है। जो चीज हमें समाज से जोड़ती है, "वह है हमारी संस्कृति"। पश्चिम के सभी विचार क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन के तहत लाइसेंस प्राप्त अपूर्ण, हैं वे पूरे जीवन के बारे में नहीं सोचते हैं, इसलिए हम उन्हें स्वीकार नहीं करते हैं, और हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह जीवन को एक पूर्ण विचार मानता है।

क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन के तहत वे पूरे जीवन के बारे में नहीं सोचते हैं, इसलिए हम उन्हें स्वीकार नहीं करते हैं, और हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह जीवन का एक पूर्ण विचार लेता है।

हमारी संस्कृति में पूरी मानव दुनिया को टुकड़ों में नहीं देखा जाता है, हमारी संस्कृति में एकता की भावना है। दीनदयाल उपाध्याय भारत की इस संस्कृति के साधक बन गए। यहाँ की संस्कृति में, संस्कृति का आधार, जो इस राष्ट्र की वास्तविक प्रकृति पर आधारित है और जिसके कारण यह संस्कृति बहुत विशाल और शक्तिशाली है। संस्कृति की इस शक्ति और विशेषता ने वर्षों की गुलामी के बाद भी इसे जीवित रखा है। दीनदयाल उपाध्याय ने संस्कृति के इस मूल रूप को जीवित रखने के लिए काम किया। हमारी संस्कृति में, ब्रह्मांड या सृष्टि के हर कण का चिंतन होता है। जहाँ पेड़–पौधों और जानवरों का महत्व और सम्मान होता है, वहाँ हम सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, वायु, जल को भगवान के अंश के रूप में देखते हैं और उनकी पूजा करते हैं।

हमारी संस्कृति की विशेषता यह है कि हम पूरे ब्रह्मांड के बारे में सामूहिक रूप से सोचते हैं। व्यक्ति और समाज में हमारे लिए कोई भी महत्वपूर्ण नहीं हो सकता है, क्योंकि दोनों का अपना महत्व है। कोई भी छोटा या बड़ा, कम या ज्यादा नहीं होता। विश्व संस्कृतियों से यह भारत की संस्कृति की एक अतुलनीय विशेषता है कि सदियों की गुलामी के बाद भी यह अपने मूल रूप में मौजूद है। इसका एक कारण यह हो सकता है कि यहाँ के लोगों का अपनी संस्कृति और विविधता को शामिल करने की क्षमता में गहरा विश्वास है। प्रो. मैकडॉनेल ने ''अपने संस्कृत साहित्य के इतिहास'' में हमें बताया है कि भारतीय साहित्य का महत्व समग्र रूप से इसकी मौलिकता में है। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के अंत में, भारतीयों ने अपनी संस्कृति को उस समय भी स्थापित किया था जब यूनानियों ने उत्तर–पश्चिम पर आक्रमण किया था। उसके बाद विदेशी हमले हुए, लेकिन इन सभी हमलों ने हमारी संस्कृति को प्रभावित नहीं किया।

भारतीय आर्यों का जीवन, साहित्य और संस्कृति का विकास विदेशी गुलामी के दौरान भी बिना किसी बाधा के एक अखंड क्रम में जारी रहा। यह भारत की संस्कृति का स्वभाव रहा है कि किसी अन्य राष्ट्र की संस्कृति पर आधिपत्य स्थापित करने की प्रवृत्ति कभी नहीं रही है क्योंकि भारत दुनिया की सभी संस्कृतियों के अधिकारों और अस्तित्व के रक्षक की भूमिका में रहा है। भारत इस मानव जगत को एक परिवार मानता रहा है इसलिए अतिक्रमण की सोच भारत के शब्दकोश में नहीं है। विश्व इतिहास गवाह है भारत कभी भी आक्रमणकारी राष्ट्रों में से एक नहीं रहा है। भारत की संस्कृति और प्रकृति मानवीय मूल्यों पर आधारित है इसलिए गुलामी के समय भी भारत की संस्कृति कभी स्थिर नहीं रही। हमारे राष्ट्र के जीवन का प्रवाह चल रहा था।

भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने डिस्कवरी ऑफ इंडिया में लिखा है, ''इतिहास के इस युग में भारत अलग–थलग नहीं हुआ है। उनका निरंतर सीधा संपर्क ईरानियों, यूनानियों, चीनी, मिड–एशियोन और अन्य लोगों के साथ रहा है। अगर इन संपर्कों के बावजूद उनकी मूल संस्कृति बनी रही, तो निश्चित रूप से इस संस्कृति में कुछ ऐसा है, एक आंतरिक शक्ति और जीवन की समझ जिसने इसे इस स्थिति में जीवित रखा। तीन से चार हजार वर्ष की और अटूट संस्कृति विकसित करना एक अद्भुत बात है।

भारत का एक लंबा समय ब्रिटिश उपनिवेशवाद के अधीन था, इसलिए उपनिवेशवाद और उनकी संस्कृति का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर पड़ना तय था। अंग्रेज शासकों ने भी अपनी संस्कृति को भारतीयों तक पहुँचाने और भारतीय संस्कृति को नष्ट करने की पूरी कोशिश की लेकिन यह भारतीय संस्कृति की एक विशेषता है कि यह अभी भी अपने मूल रूप में दुनिया में अपनी सांस्कृतिक विशेषता को प्रदर्शित कर रही है। भारत पूरी दुनिया को एक परिवार के रूप में देखता है और मानता है, इस संबंध में "वसुधैव कुटुम्बकम्" भारत का महत्वपूर्ण सिद्धांत है और आज भी भारतीय संस्कृति दुनिया को मानवता का सबक सिखा रही है। हमें भारतीय मूल संस्कृति की मौलिकता की रक्षा करनी चाहिए और उस पर विचार करना चाहिए। यह पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सपना है। हर देश का एक ही सपना होना स्वाभाविक है देशभक्ति व देशवासी, जिनका इस राष्ट्र की संस्कृति के प्रति लगाव और प्रेम है।

भारतीय संस्कृति की अद्वितीयता

भारत की संस्कृति दुनिया की अन्य संस्कृतियों से अलग है क्योंकि इसने दुनिया को मानवता का संदेश दिया है। पूरी दुनिया मानवता को एक परिवार मानती है और किसी के अधिकार क्षेत्र का अतिक्रमण नहीं करती है।

कभी भी किसी भी राष्ट्र की संस्कृति, भाषा, राजनीतिक प्रणाली का अतिक्रमण नहीं किया। भारत वह है जिसने विश्व मानवता को मानव एकता और भाईचारे का संदेश दिया।

निष्कर्ष

अंत में, दीनदयाल उपाध्याय एक सच्चे देशभक्त, लेखक, विचारक, स्वयंसेवक और राजनेता बन गए, जो इस देश की भावना, संस्कृति, भाषा और जीवन दर्शन से प्यार करते थे। दीनदयाल उपाध्याय ने अपना पूरा जीवन राष्ट्र सनातन (राष्ट्रीय शाश्वत संस्कृति) संस्कृति के सच्चे संरक्षक के रूप में बिताया और समाज को अपनी मूल जड़ों से जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया। भारतीय संस्कृति में मनुष्य, समाज और पूरे ब्रह्मांड का चिंतन होता है, इसमें मानवीय मूल्यों और आपसी सहयोग का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। दीनदयाल उपाध्याय भारत की इस संस्कृति को जीवित रखने के लिए समर्पित रहे। आज संस्कृति से जुड़े इस दृष्टिकोण का विशेष महत्व है, क्योंकि मानव जगत में ऐसी संस्कृतियों का विकास हो रहा है, जहां मानवीय मूल्य, आपसी सहयोग, परिवार, समाज खंडित हो रहे हैं। दीनदयाल उपाध्याय ऐसी संस्कृतियों, परंपराओं को जीवित रखना चाहते थे। दीनदयाल उपाध्याय समाज को राष्ट्र की ऐसी संस्कृति से जोड़ना चाहते थे जो विश्व मानवता को मानव एकता, आदर्श जीवन, सामाजिक समानता और विश्व मानव कल्याण का संदेश देती हो। इस संस्कृति का महत्व केवल भारत के लिए ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया की मानवता के लिए है, इस संस्कृति का महत्व और आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, ए. (2017) *मैं दीनदयाल उपाध्याय बोल रहा हूं,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली 110002, पृ. 45।
2. अग्निहोत्री, आर. एस. शुक्ल, बी. पी. (2008) *राष्ट्र जीवन की दिशा,* लोकहित प्रकाशन, लखनऊ 226004, पृ. 33–34।
3. शर्मा, एम. सी. (2017) *एकात्ममानवद तत्व–मिनन्सा–सिदांत–विवेचन,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 110002, पृ. 17।
4. शर्मा, एच. डी. (2017) *राष्ट्रीय जीवन माला पंडित दीनदयाल उपाध्याय,* फयुजन बुक्स, नई दिल्ली 110020, पृ. 159।
5. गैन, सुरेंद्र प्रसाद (1999) पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचार सुरेंद्र प्रसाद गेन द्वारा 1999 आईएसबीएनः 9788176291927, 8176291927, दीप एवं दीप पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ. 167।
6. सुनीता, (2022) दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रवादः एक दृष्टि, *शोध दृष्टिकों,* एक अंतरराष्ट्रीय जर्नल, यूजीसी अनुमोदित, वाल्यूम 5, अंक 2, पृ. 21।

****